यूक्रेनी लोक कथा

बकरी और मेढ़ा

चित्र: ए. बज़िलेविच

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

कभी एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत रहते थे. उनके पास एक बकरी और एक मेढ़ा था. बकरी और मेढ़ा दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे: जहां भी बकरी जाती थी, मेढ़ा भी वहां निश्चित रूप से जाता था. अगर बकरी गोभी लेने के लिए बगीचे में जाती, तो मेढ़ा भी वैसा ही करता था. अगर बकरी बगीचे में जाती, तो मेढ़ा ज़रूर उसके पीछे होता था.

"बूढ़ी औरत," एक दिन बूढ़े आदमी ने कहा, "चलो हम बकरी और मेढ़े को यहां से भगा देते है, क्योंकि उन्हें बगीचे और रसोई से बाहर रखना बिल्कुल संभव नहीं है."

“तुम दोनों तुरंत यहां चले जाओ और फिर मुझे कभी अपना मुंह मत देखना!” उसने बकरी और मेढ़े से कहा.

इसलिए बकरी और मेढ़े ने अपने लिए एक बोरा उठाया और वो दोनों चल दिए. वे चलते रहे और चलते रहे और अचानक उन्हें एक खेत के बीच में एक भेड़िये का सिर पड़ा हुआ दिखाई दिया. वैसे मेढ़ा बहुत ताकतवर था, लेकिन उसमें बहुत हिम्मत नहीं थी. दूसरी ओर बकरी बहुत बहादुर थी, लेकिन वो ज़्यादा ताकतवर नहीं थी.

बकरी ने कहा:

"भेड़िया का सिर उठा लो, मेढ़े, क्योंकि तुम अधिक शक्तिशाली हो."

"अरे नहीं, बकरी, तुम ही उसे उठाओ, क्योंकि तुम अधिक साहसी हो."

फिर उन उन्होंने मिलकर भेड़िये का सिर उठाया और उसे बोरे में भरा और फिर वे आगे बढ़े.

वे चलते रहे और वे चलते रहे और फिर कुछ समय बाद उन्हें अपने सामने एक रोशनी नज़र आई.

"वो ज़रूर कोई घर होगा," उन्होंने कहा. "चलो हम वहां चलकर अपनी रात बिताएंगे. अगर हम वैसा करेंगे तो भेड़िए हमें कभी नहीं पकड़ पाएंगे."

फिर वे प्रकाश की ओर बढ़े, लेकिन उन्होंने वहां क्या देखा! वो रोशनी एक आग थी जिस पर तीन भेड़िये अपना दलिया पका रहे थे.

"नमस्कार दोस्तों!" बकरी और मेढ़े ने उनका अभिवादन किया.

"नमस्ते!" भेड़ियों ने उत्तर दिए. "यह बड़ी अच्छी बात है कि तुम लोग खुद ही यहां पधारे हो. जब तक हमारा दलिया पक रहा है, तब तक हम तुम्हारे मांस का आनंद लेंगे."

यह सुनकर बकरी बहुत घबरा गई और मेढ़ा तो डर के मारे लगभग मर ही गया.

बकरी ने कहा:

"भेड़िए का सिर बोरे से बाहर निकालो, भाई मेढ़े!"

मेढ़े ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था, और तब बकरी ने कहा:

"अरे वो नहीं. बड़ा वाला निकालो!"

मेढ़े ने वही सिर दुबारा बाहर निकालना शुरू किया, लेकिन बकरी फिर से चिल्लाई:

"अरे वो नहीं! सबसे बड़ा वाला भेड़िए का सिर बाहर निकालो!"

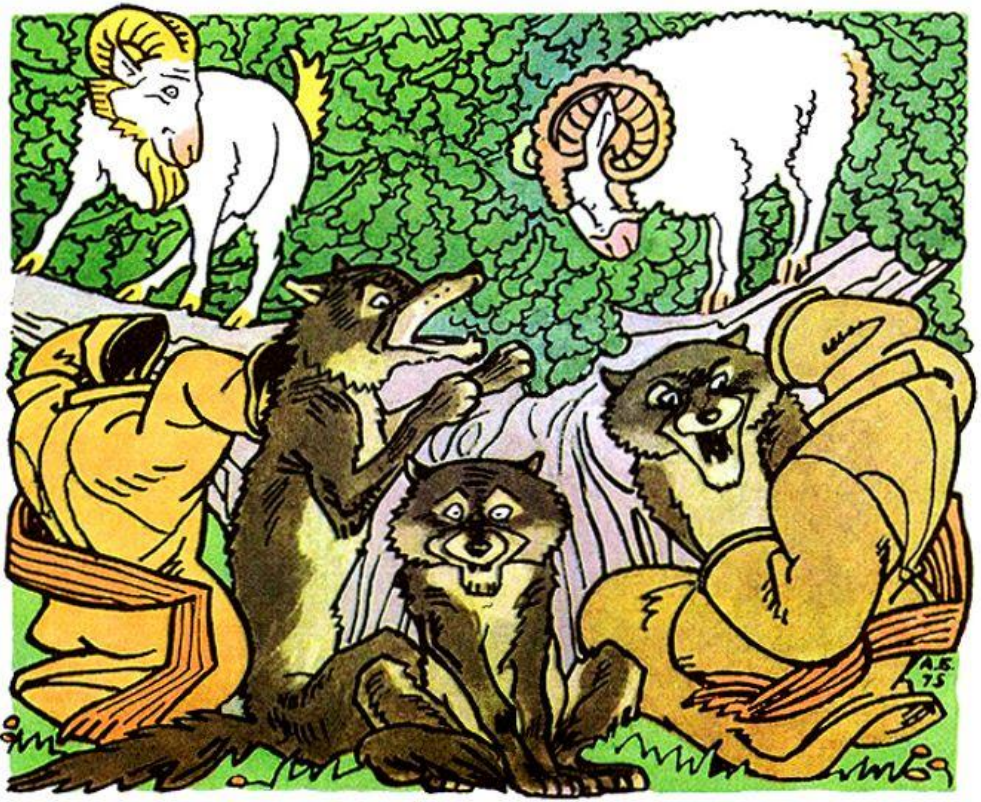

उसे घटना से भेड़िए वाकई में बहुत चौंके और घबरा गए और वे भागने का कोई उपाय सोचने लगे. क्योंकि मेढ़ा बोरी में से एक के बाद एक करके भेड़ियों के सिर बाहर निकाल रहा था!

भेड़ियों में से एक ने कहा:

"भाइयों, यहां पर हमारी एक अच्छी महफ़िल जमी है और साथ में बढ़िया दलिया भी पक रहा है. दलिए में बस थोड़े पानी की कमी है. इसलिए मैं जरा पानी लेने के लिए जा रहा हूं."

फिर वो भेड़िया थोड़ी दूर चला गया और उसने हल्के से कहा ताकि बाकी भेड़िए उसे सुन न सकें, "बाकी भेड़िए गड्ढे में जाएं," और फिर वो वहां से रफूचक्कर हो गया.

अब दूसरा भेड़िया सोचने लगा कि वो वहां से कैसे बचकर भागे.

"उस दुष्ट भेड़िए को देखो!" उसने पहले भेड़िए के बारे में कहा. "ऐसा लगता है मानो धरती उसे निगल गई हो! वो दलिए के लिए पानी लेकर अभी तक नहीं लौटा है. मुझे लगता है कि मैं जाकर उसे खोजकर वापस लाऊंगा."

फिर दूसरा भेड़िया भी वहां से चला गया. वो फिर कभी वापस नहीं लौटा.

तीसरा भेड़िया कुछ देर वहीं बैठा रहा और फिर उसने कहा:

"मुझे लगता है मैं भी जाऊंगा और फिर उन दोनों भेड़ियों को वापस पकड़कर लाऊंगा!"

और फिर वो भी भाग गया. वो बहुत खुश था कि वो बाल-बाल बच गया था.

भेड़ियों के जाने के बाद बकरी ने मेढ़े से कहा:

"जल्दी करो, भाई मेढ़े! अब हमारे पास बर्बाद करने के लिए बिल्कुल वक्त नहीं है. चलो हम फटाफट दलिया खाते हैं और फिर अपनी जान बचाकर यहां से भागते हैं."

इस बीच पहले भेड़िये ने काफी देर सोचा और फिर उसने कहा:

"हम न जाने उस बकरी और मेढ़े से क्यों डर गए भाइयों? चलो वापस चलते हैं और उन दुष्टों को खा जाते हैं!"

भेड़िये वापस लौटे. लेकिन तब तक बकरी और मेढ़े ने दलिया खा लिया था. उन्होंने आग बुझा दी और वे एक ऊंचे बांझ के पेड़ पर चढ़ गए थे. वे वहां बैठे रहे, और भेड़ियों ने उन्हें नहीं देखा. भेड़िये पेड़ के नीचे खड़े रहे और सोचने लगे कि वे बकरी और मेढ़े को कैसे पकड़ें. जब थोड़ी देर के बाद उन्होंने ऊपर देखा, तो बकरी और मेढ़ा बांझ के पेड़ पर थे. बकरी, जो उन दोनों में से अधिक बहादुर थी, पेड़ के बिल्कुल ऊपर चढ़ गई थी, और मेढ़ा, जो इतना बहादुर नहीं था, थोड़ा नीचे बैठा था.

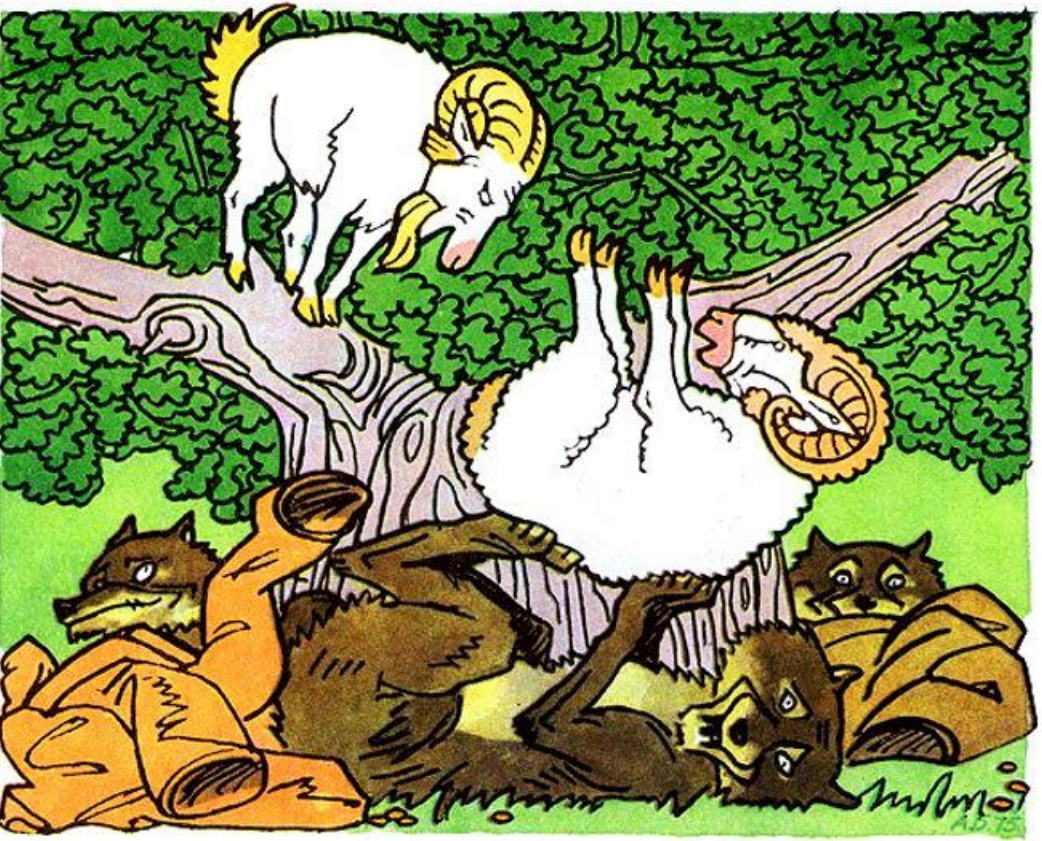

"ठीक है," भेड़ियों में से एक ने झबरे भेड़िये से कहा, "तुम हममें से सबसे बड़े हो, इसलिए तुम ही हमें बताओ कि उन्हें कैसे नीचे लाया जाए."

झबरा भेड़िया पेड़ के नीचे लेट गया और सोचने लगा कि उसे क्या करना चाहिए.

जहां तक मेढ़े की बात है, वो अपनी शाखा पर बैठा कांप रहा था. फिर वो इतनी ज़ोर से कांपा कि वो अपना संतुलन खो बैठा और सीधे नीचे गिर गया. वो सीधा झबरे भेड़िये के ऊपर जाकर गिरा! और तभी पेड़ पर बैठी बकरी ज्यादा देर सोचे बिना, चिल्लाई:

"मुझे वो झबरा भेड़िया सौंप दो!"

और फिर बकरी सीधी बाकी दोनों भेड़ियों के ऊपर आकर गिर गई.

उसके बाद भेड़िए डर के मारे अपनी जान बचाकर सड़क पर सरपट दौड़े और दौड़ते समय उन्होंने धूल के बादल उड़ाए.

फिर बकरी और मेढ़े ने अपने लिए एक छोटी सी झोपड़ी बनाई और वे वहां ख़ुशी-ख़ुशी रहे और साल-दर-साल अमीर होते गए.